'शीलभद्र चरित' के चित्र भी काश्मीर शैली के हैं। चित्रों में अधिकांशतः पीले, ~~लाल~~ लाल व सिंदूरी रंग का प्रयोग हुआ है। पुरुष पुरुषत्वपूर्ण तथा स्त्रियाँ ओजपूर्ण एवं सुंदर हैं। इन चित्रों में आकृतियों को धोती, उत्तरीय तथा आभूषण पहनाए गए हैं।

(ग) पटना शैली — 18वीं शताब्दी के समाप्त होने के साथ ही मुगल, राजस्थानी और पहाड़ी शैलियाँ भी समाप्त हो गईं। अंग्रेजों के आगमन के बाद भारतीय और पाश्चात्य कला के मिश्रण से जो शैली पनपी उसे पटना शैली कहा गया। कुछ लोग इसे 'कंपनी शैली' भी कहते हैं। इस समय बने चित्रों में भारतीयों की दैनन्दिन दशा का चित्रण है। कागज के अतिरिक्त हाथी दाँत पर भी चित्रकारी की गई है। चित्रों में रेखाएँ बारीक हैं, रंगों को हल्का करके प्रकाश छाया दिखाई गई है। रंग सीमित हैं, कहीं-